

सत्संग शिक्षण परीक्षा

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था, शाहीबाग, अहमदाबाद - ३८०००४.

सत्संग प्रवीण : प्रश्नपत्र - २

रविवार, ६ मार्च, २०१६

समय : दोपहर २.०० से ५.००

कुल गुण : १००



अनुपस्थित परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका का केवल यही पृष्ठ वापस भेजना है ।

☞ परीक्षार्थी के नाम सम्बंधित विवरण के साथ 'बारकोड' अंकित किया गया है । कृपया उस पर किसी प्रकार का नुकसान मत किजिए ।

☞ अनिवार्य : निम्न लिखित सूचना की परीक्षार्थी को अपने आप पूर्ति करनी है ☞

बिना वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर की उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।

परीक्षार्थी का जन्म दिन दिनांक महिना वर्ष

परीक्षार्थी का अभ्यास

परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका पर अंकित नाम सहित अनिवार्य विवरण की सत्यता की जाँच करने के पश्चात् वर्ग निरीक्षक हस्ताक्षर करें ।

वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर

☞ पीछे दी गई सूचनाओं का अवश्य पालन करें ।

परीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षक की नोंद :-

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	१ (९)	
	२ (९)	
	३ (८)	
	४ (६)	
	५ (५)	
	६ (६)	
	७ (८)	

विभाग-१, कुल गुण (५१)

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	८ (९)	
	९ (९)	
	१० (८)	
	११ (५)	
	१२ (४)	
	१३ (८)	
	१४ (६)	

विभाग-२, कुल गुण (४९)

मोडरेशन विभाग माटे ४

गुण आंकडामें

शब्दोंमें

चेकरनुं नाम

❧ परीक्षार्थीओं को महत्वपूर्ण सूचनाएँ ❧

१. परीक्षार्थी सत्संग प्रारंभ से प्राज्ञ - ३ तक की क्रमशः हर परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ही अगली परीक्षा दे सकते हैं ।
२. सत्संग शिक्षण परीक्षा के मुख्य दिन परीक्षार्थी के नामलिखित मुख्य पृष्ठ परीक्षा कार्यालय द्वारा प्रिन्ट करके भेजा जाता है । उसके अनुसार ही परीक्षार्थी को परीक्षा की श्रेणी (प्रारंभ, प्रवेश, परिचय आदि...) एवं माध्यम (गुजराती, हिन्दी, English) में परीक्षा देनी होगी । इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन करके दी गई परीक्षा मान्य नहीं होगी ।
३. परीक्षार्थी को पूर्वकसौटी के प्रश्नपत्र की श्रेणी (प्रारंभ, परिचय, प्राज्ञ-१, केवल प्रथम.....) एवं परीक्षा के माध्यम (गुजराती, हिन्दी, English) अनुसार ही मुख्य परीक्षा देनी होगी । पूर्वकसौटी की जानकारी के अनुसार परीक्षा केन्द्र के मुख्य परीक्षा कार्यकर्ता को अंतिमसूची (Final List) भेजी जाती है, उसके अनुसार ही मुख्य परीक्षा के दिन परीक्षा देनी होगी । अंतिमसूची से अलग दिये गए विवरणवाली परीक्षा रद्द मानी जाएगी और ऐसी उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।
४. मुख्य परीक्षा के दिन परीक्षा खंड में उपस्थित हर एक परीक्षार्थी अपनी नामलिखित उत्तर पुस्तिका लेकर तथा उसमें मांगा गया अन्य विवरण (जन्म दिनांक, शिक्षा) लिखकर वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर अवश्य करवा लें । वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर बिना लिखी गई उत्तर पुस्तिका रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।
५. परीक्षार्थी केवल ब्लू या काली स्याही वाली पेन से ही उत्तर पुस्तिका में उत्तर लिखें । पेन्सिल अथवा लाल, हरी या अन्य स्याही से लिखे गए उत्तर या एक से ज्यादा स्याही से लिखी गई उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।
६. सूचनानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । काटकूट किए हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । अस्पष्ट और पढ़ा न जा सके, ऐसे उत्तर मान्य नहीं होंगे । एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावटवाली उत्तर पुस्तिका रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।
७. परीक्षा खंड के बाहर अथवा अन्य सभी परीक्षार्थीओं से अलग या परीक्षा के नियमों का उल्लंघन कर के दी गई परीक्षा मान्य नहीं होगी ।
८. सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व अनुमति के बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'स्थानापन्न' या 'सबस्टीट्यूट राइटर' अथवा 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तर पुस्तिका रद्द मानी जाएगी ।
९. सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद को पूर्व अवगत किए बिना, रजिस्टर्ड परीक्षा केन्द्र के बदले में अन्य परीक्षा केन्द्र से दी गई परीक्षा रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।
१०. सत्संग प्रवेश, परिचय, प्रवीण एवं सत्संग प्राज्ञ (प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्रों में रजिस्टर्ड हुए) के लिए परीक्षार्थियों को दोनों प्रश्नपत्रों की परीक्षा देनी अनिवार्य है । किसी भी एक ही प्रश्नपत्र की दी गई परीक्षा की उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।
११. मुख्य परीक्षा के दिन उत्तर पुस्तिका के अलावा अतिरिक्त पन्नों में लिखे हुए उत्तरों का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।
१२. परीक्षा-कक्ष में परीक्षा के दौरान किसी भी परीक्षार्थी को मोबाईल फोन तथा इलेक्ट्रॉनिक साधन जैसे टेब्लेट, लेपटॉप आदि का उपयोग करने तथा उसे अपने पास रखने की अनुमति नहीं है ।
१३. प्राज्ञ की परीक्षा का फॉर्म भरने से पहले निम्नलिखित मुद्दे ध्यान में रखें ।
 - परीक्षार्थी एक ही साल में दोनो प्रश्नपत्र दे सकता है । अथवा पहले साल में पहला प्रश्नपत्र और दूसरे साल में दूसरा प्रश्नपत्र दे सकता है । पहले प्रश्नपत्र में उत्तीर्ण (पास) होने के बाद ही दूसरा प्रश्नपत्र दिया जा सकता है । प्राज्ञ परीक्षा में केवल प्रथम प्रश्नपत्र या दूसरा प्रश्नपत्र देनेवाले को उत्तीर्ण होने के लिए उस प्रश्नपत्र में ४५ अंक प्राप्त करना आवश्यक है ।
 - जिस परीक्षार्थी ने प्राज्ञ के दोनो प्रश्नपत्र में रजिस्ट्रेशन कराया हो और यदि वह परीक्षार्थी किसी एक प्रश्नपत्र में ही उपस्थित रहता है और दूसरे प्रश्नपत्र में अनुपस्थित रहता है, तो एक प्रश्नपत्र की दी गई उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा । जिस परीक्षार्थी ने प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्र दिए हों, उसे उत्तीर्ण होने के लिए ९० अंक प्राप्त करने होंगे ।
 - प्राज्ञ परीक्षा देने वाले सभी परीक्षार्थी कृपया ध्यान रखें कि जो परीक्षार्थी अलग-अलग साल में प्रश्नपत्र प्रथम और प्रश्नपत्र दूसरा देते हैं, उनको प्रथम प्रश्नपत्र ४५ या उससे ज्यादा अंक से उत्तीर्ण करने के बाद दूसरा प्रश्नपत्र ज्यादा से ज्यादा एक ही साल के विराम के बाद देना होगा । एक से ज्यादा साल की अनुपस्थिति के बाद दिया हुआ दूसरा प्रश्नपत्र स्वीकृत नहीं होगा । ऐसे परीक्षार्थी को पुनः प्राज्ञ का प्रथम प्रश्नपत्र अथवा दोनों प्रश्नपत्र देने होंगे ।
 - प्राज्ञ परीक्षा के पारितोषिक विजेता की सूची में आनेवाले परीक्षार्थी में से जिन्होंने प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्र एक साथ एक ही साल में दिया हो, उनको १० प्रतिशत (फिसदी) अंक पुरस्कार के रूप में दिए जाएंगे और इस तरह परीक्षार्थी पुरस्कार के योग्य माना जाएगा ।
 - नोंध : जिस परीक्षार्थी ने भारत की प्रवीण परीक्षा उत्तीर्ण की हो, ऐसे ही परीक्षार्थी प्राज्ञ-१ परीक्षा दे सकते हैं ।
१४. अवैद्य रजिस्ट्रेशन !!! परिणाम नहीं मिलेगा !!!

सिर्फ मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्र - १ गुण - ९	नाम
----------------------------------	--------------------	-----

विभाग - १ : किशोर सत्संग प्रवीण

प्र. १ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । (कुल गुण : ९)

१. “आप यह फानस शौचालय में रख आईए ।”

कौन कहता है ? किसको कहता है ?

कब कहता है ?

गुण : ३

२. “आप यह गेहूँ सभी को पीसने के लिए देते हो ?”

कौन कहता है ? किसको कहता है ?

कब कहता है ?

गुण : ३

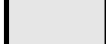
३. “हमारे भक्तराज डोसाभाई क्या कर रहे हैं ?”

कौन कहता है ? किसको कहता है ?

कब कहता है ?

गुण : ३

उपरोक्त प्रश्नों के कुल गुणांक



केवल इन्ही गुणांकों को मुख्य पृष्ठ पर लिखें

प्र. २ निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं तीन के बारे में कारण लिखिए । (बारह पंक्ति में) (कुल गुण : ९)

१. कुबेरदास त्यागी नहीं होने पर गृहस्थाश्रम में रहे ।

२. श्रीहरिलीलाकल्पतरु भगवान स्वामिनारायण के सर्वोपरि रूप को प्रकट करनेवाला ग्रंथ है ।

३. मगनभाई ने अपना सारा जीवन श्रीजीमहाराज और शास्त्रीजी महाराज की सेवा में समर्पित कर दिया ।

४. वणिक भक्त ने अपने घर से संतों के लिए सीधा-सामान की व्यवस्था कर दी ।

()

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

गुण : ३	
---------	--

[illegible]

सिर्फ मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्र - ७ गुण - ८	नाम
----------------------------------	--------------------	-----

प्र. ७ निम्नलिखित कीर्तन/जनमंगलस्तोत्रम्/ अष्टक / श्लोक आदि को सूचनानुसार पूर्ण कीजिए । (कुल गुण : ८)

१. जनमंगलस्तोत्रम् : ॐ श्री राधाकृष्णोष्टदैवताय नमः

.....

..... ॐ श्रीतीव्रवैराग्याय नमः ।

गुण : २	
---------	--

२. वहाला तारी मूर्ती अति

.....

..... हसीने बोलावता रे लोल ।

गुण : २	
---------	--

३. श्रीवासुदेव

.....

..... शरणं प्रपद्ये ॥

गुण : २	
---------	--

४. निजात्मानं कृष्णस्य सर्वदा ॥ - श्लोक का हिन्दी में अनुवाद लिखिए ।

.....

.....

गुण : २	
---------	--

उपरोक्त प्रश्नों के कुल गुणांक 

--

 केवल इन्ही गुणांकों को मुख्य पृष्ठ पर लिखें

विभाग - २ : गुणातीतानंद स्वामी

प्र. ८ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । (कुल गुण : ९)

१. “हम तो सर्वोपरि पुरुषोत्तमनारायण हैं ।”

कौन कहता है ? किसको कहता है ?

कब कहता है ?

.....

गुण : ३	
---------	--

२. “बृहस्पति के समान वक्ता बनेगा और भागवत धर्म का प्रचार-प्रसार करेगा ।”

कौन कहता है ? किसको कहता है ?

कब कहता है ?

.....

गुण : ३	
---------	--

गुण : ३	
---------	--

()

गुण : ३	
---------	--

()

सिर्फ मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्र - १२ गुण - ४		नाम	प्र - १३ गुण - ८		नाम
----------------------------------	---------------------	--	-----	---------------------	--	-----

.....

.....

.....

.....

.....

भावार्थ :

.....

.....


.....

उपरोक्त प्रश्नों के कुल गुणांक   केवल इन्हीं गुणांकों को मुख्य पृष्ठ पर लिखें

प्र.१३ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें ।
(कुल गुण : ८)


सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहीं दिया जाएगा ।

१. अंतिम बीमारी में महाराज बोले :

गुण : २ 


- (१) ☐ मीठा क्हाला केम विसरुं
- (२) ☐ सगुण न जाने कोई
- (३) ☐ निर्गुण ब्रह्म सुलभ अति
- (४) ☐ मारुं तमथी बांधेल तन हो ।

२. जूनागढ के नवाब महाराज के दर्शन करने आए

गुण : २ 


- (१) ☐ ये साधु हमारे जैसे हैं ।
- (२) ☐ खुदा जैसे तो एक संत ही है ।
- (३) ☐ आप अब यहाँ हमेशा रहना ।
- (४) ☐ हम रहें या तुम जेसा रखें ?

३. तुलसी दवे

गुण : २ 

- (१) ☐ षट्चक्र दिखाई दिए
- (२) ☐ भूमापुरुष का लोक देखा
- (३) ☐ छः प्रश्न पूछे
- (४) ☐ स्वामी के स्वरूप की प्रतीति हुई

४. ब्रह्मानंद स्वामी के सुजाव :

गुण : २ 

- (१) ☐ महाराज ने प्रसन्न होकर पुष्पहार दिया है तो वह रखना चाहिए ।
- (२) ☐ नागर अमलदार शिवपंथी और द्वेषी है ।
- (३) ☐ सेवा और समागम करेंगे तो तुम्हारा कार्य हो जायेगा ।
- (४) ☐ प्रदेश भी निर्धन तथा जड़ है ।

उपरोक्त प्रश्नों के कुल गुणांक   केवल इन्हीं गुणांकों को मुख्य पृष्ठ पर लिखें

सिर्फ मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्र - १४ गुण - ६		नाम
----------------------------------	---------------------	--	-----

प्र.१४ निम्नलिखित गलत वाक्य को उसके विषय के अनुलक्ष्य में सही लिखिए । (कुल गुण : ६)

सूचना :- संपूर्ण वाक्य सही लिखा होगा तो ही गुण प्राप्त होंगे, अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।

१. निर्मानिता : धोलका के मंदिर के कोठारी वासुदेवदास स्वामी को कुछ आध्यात्मिक कारण से मन उदास रहता था ।

उ.
.....
..... गुण : १

२. श्रीहरि के साथ प्रथम मिलाप : संवत् १८५६, कार्तिक वदी एकादशी के दिन मुक्तानंद स्वामी ने सरजूदासजी को पार्षदी दीक्षा देने का निश्चय किया ।

उ.
.....
..... गुण : १

३. आज्ञाधारक : सब्जी की तीन टोकरी, महागीता नाम की पुस्तक, एक सुंदर चट्टाई तथा घारी की मटकी आदि लेकर ब्रह्मचारी तैयार हुए ।

उ.
.....
..... गुण : १

४. जूनागढ में मंदिर निर्माण का प्रारंभ : गुणातीतानंद स्वामी आदि सद्गुरुओं की उपस्थिति में संवत् १८८५ में फाल्गुन शुक्ला द्वितीया के दिन जूनागढ मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा हुई ।

उ.
.....
..... गुण : १

५. सत्संग में अक्षरब्रह्म स्वरूप का प्रवर्तन : स्वामी के स्वधामगमन के बाद उनके अंतेवासी सेवक मुंजा सुरु त्यागी हुए थे, उनका नाम रामरतनदास था ।

उ.
.....
..... गुण : १

६. प्रौढ प्रताप : संवत् १९१२ में कोठारी बेचर महाराज ने अहमदाबाद में धनुर्मास निमित्त कथाप्रसंग का आयोजन किया था ।

उ.
.....
..... गुण : १

उपरोक्त प्रश्नों के कुल गुणांक    केवल इन्हीं गुणांकों को मुख्य पृष्ठ पर लिखें